IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

गांधीइज्म आफ्टर गांधी

डॉ. जावेद अख्तर
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय पीजी कॉलेज, छर्रा, अलीगढ़

सारांषः ''राष्ट्रपिता'' महात्मा गांधी (1869–1948) ने न केवल भारत के राजनीतिक क्षेत्र में विलक्षण कार्य किया, अपितु संसार के राजनीतिक चिंतन में बड़ी क्रान्तिकारी मौलिक भूमिका अदा की। गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को ''गांधीवाद''/''गांधीइज्म'' का नाम दिया जाता है, जबकि गांधी जी ने प्लेटो, अरस्तू या मार्क्स की भांति क्रमबद्ध या व्यवस्थित रूप से किन्हीं विशेष सिद्धांतों की विवेचना नहीं की, अपितु परिस्थितियों के अनुसार चिंतन किया, और लेखन कार्य किया।
विनोबा भावे के शब्दों में ''किसी ने गांधी जी को यह सुझाव दिया कि वह अपने विचारों को लेखबद्ध करें। इस पर महात्मा गांधी जी ने उन्हें जवाब दिया 'एक तो मेरे पास समय नहीं है, और दूसरे मैं अब भी प्रयोग ही कर रहा हूँ। इसलिये यदि मेरे विचारों को लेखबद्ध होना ही है तो ऐसा स्वतः और क्रमशः विकसित होकर ही होगा।'''

मुख्यषब्दः महात्मा गांधी के वैचारिक दर्शन

प्रस्तावना

''राष्ट्रपिता'' महात्मा गांधी (1869–1948) ने न केवल भारत के राजनीतिक क्षेत्र में विलक्षण कार्य किया, अपितु संसार के राजनीतिक चिंतन में बड़ी क्रान्तिकारी मौलिक भूमिका अदा की। गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को ''गांधीवाद''/''गांधीइज्म'' का नाम दिया जाता है, जबकि गांधी जी ने प्लेटो, अरस्तू या मार्क्स की भांति क्रमबद्ध या व्यवस्थित रूप से किन्हीं विशेष सिद्धांतों की विवेचना नहीं की, अपितु परिस्थितियों के अनुसार चिंतन किया, और लेखन कार्य किया।
विनोबा भावे के शब्दों में ''किसी ने गांधी जी को यह सुझाव दिया कि वह अपने विचारों को लेखबद्ध करें। इस पर महात्मा गांधी जी ने उन्हें जवाब दिया 'एक तो मेरे पास समय नहीं है, और दूसरे मैं अब भी प्रयोग ही कर रहा हूँ। इसलिये यदि मेरे विचारों को लेखबद्ध होना ही है तो ऐसा स्वतः और क्रमशः विकसित होकर ही होगा।'''
महात्मा गांधी के वैचारिक दर्शन की आधार मूलतः दो पुस्तकें हैं ''हिन्द–स्वराज्य'' और आत्मकथा अथवा ''मेरे सत्य के प्रयोग''। हिन्द–स्वराज्य लिखा तो उनकी उम्र लगभग 1908 में लंदन से लौटते समय ''किल्डोनन उन्होंने जहाज के ही कागजों पर 13–22 उन्होंने लिखा कि उन पर इस तरह का नहीं सकें जबकि इस तरह की यह कुछ–कुछ इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) जैसी चीज भी है। कहते हैं कि पैगम्बर मोहम्मद साहब को कुरान का इलहाम हुआ था। बाइबिल के ''सर्मन आन द माउंट'' के बारे में ऐसा कहा जाता है, यह आश्चर्यजनक नहीं है कि अमेरिका में जब यह पुस्तक प्रथम बार छपी तो इसका शीर्षक 'सर्मन ऑन द सी दिया गया था। लगभग एक सदी पूर्व लिखी गयी इस छोटी सी पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय बाजारवाद के आगे घुटने टेकते, साम्प्रदायिक हिंसा और मूल्यहीनता से पीड़ित हमारे देश को आज एक नई राह दिखा सकती है।
गांधी जी जब ''हिंद–स्वराज्य'' लिख रहे थे तो वे भी एक भूमंडलीकरण का सामना कर रहे थे, और वर्तमान विश्व के विकासशील व अल्पविकसित देश तथा हम भी एक भूमंडलीकरण के शिकार हो रहे हैं। गांधी जी के सामने जो भूमण्डलीकरण था उसमें यूरोप के देश जगह–जगह साम्राज्य स्थापित करके वहाँ के संसाधनों व कच्चे माल का उपभोग अपने देश की औद्योगिक

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

क्रान्ति में कर रहे थे, जैसा कि इंग्लैण्ड ने भारत व अन्य अपने उपनिवेशों का किया था। उस समय के भूमंडलीकरण की प्रेरणा राज्य में थी, परन्तु जिस भूमंडलीकरण का सामना हम कर रहे हैं, उसकी प्रेरणा बाजार में है। जबकि गांधी जी के समय में जो साम्राज्यवाद या भूमंडलीकरण हो रहा था वह राज्य स्थापित करके बढ़ता था। हमारे सामने जो भूमंडलीकरण का संकट है उसका हित बाजार स्थापित करने में है। गांधी जी के समय में जिस राज्य में भूमंडलीकरण करना होता था, उसमें यह जरूरी होता था कि आप एशिया, अफ्रीका या लेटिन अमेरिका में राज्य को स्थापित करके उस देश के संसाधनों का दोहन करें। जिस प्रकार के भूमंडलीकरण का हम सामना कर रहे हैं, उसमें राज्य स्थापित करना अनिवार्य नहीं है बल्कि उनकी पूंजी हमारे बाजारों में आने–जाने दिया जाय और वे अपने बाजार स्थापित कर लें, सिर्फ यही जरूरी है कि उनकी पूंजी व उत्पाद को हमारे बाजारों में आने की पूरी छूट मिले। यानि हमने अब तक जितना औद्योगीकरण किया है और जिन देशों ने औद्योगिक क्रान्ति करके तकनीकी व नये उत्पाद बनाये हैं उसे पूर्णतः या अर्ध रूप से बन्द कर दें।

इस नये भूमंडलीकरण का उद्देश्य हमें एक ग्राहक समाज में परिवर्तित करना चाहता है, एक उत्पादक समाज नहीं बने रहने देना चाहता है। इससे स्पष्ट है कि गांधी जी के समय के भूमंडलीकरण में राज्य और राष्ट्र का जो महत्व था वह महत्व अब पूँजी को दे दिया गया है। जिसको आज के संसार में उदारीकरण कहा जा रहा है वह उदारीकरण कोई हृदय का उदार होना, राष्ट्र और राज्य की सीमाओं का उदार होना नहीं है। इस उदारता का वास्तविक अर्थ है कि पूँजी पर रोक–टोक न हो।

प्रभात जोशी के शब्दों में – मैंने उस पूँजी के लिये अप्सरा पूँजी शब्द चला रखा है, जो कि लक्ष्मी के बिल्कुल विपरीत है। अप्सरा नाचती हुई, गाती हुई आपको लुभाती हुई आती है और आपका घर बसाने का ढोंग करती है और फिर आपके घर को बर्बाद करके चली जाती है। उसकी प्रथम शर्त ही यह होती है कि मुझे रोका तो मैं सर्वनाश करके चली जाऊँगी।

2 गाँधी जी के स्वराज्य का स्वरूप

स्वराज्य से गाँधी जी का अभिप्राय ''लोक सम्मति'' के अनुसार होने वाला भारत वर्ष का शासन तथा लोक सम्मति'' का निश्चय व्यस्कमताधिकार द्वारा हो और लिंग भेद नहीं होगा तथा चाहे इस देश के हों या फिर इस देश में आकर बस गये हों, वे सभी जिन्होंने अपने शारीरिक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो और मतदाता सूची में अपना नाम लिखवा लिया हो।

गाँधी जी ने अपने शब्दों में व्यक्त किया – ''सच्चा स्वराज्य कुछ लोगों द्वारा सत्ता प्राप्त कर लेने से नहीं है, बल्कि, जब सत्ता का दुरूपयोग होता हो तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है।'' उन्होंने कहा कि ''उनके सपनों के स्वराज्य में जाति या धर्म के भेदों को कोई स्थान नहीं हो सकता उस पर शिक्षित या धनवान का एकाधिपत्य नहीं होगा'' वह स्वराज्य सभी कल्याण के लिये होगा। सबकी गिनती में किसान तो आते ही हैं, किन्तु लूले लंगड़े, अन्धे और भूख से मरने वाले लाखों–करोड़ों मेहनतकश मजदूर भी अवश्य आते हैं।''

गांधी जी के द्वारा उद्धृत शब्द ''आपको मालूम है, मैंने वचन और कार्य से यह दिखलाने की कोशिश की है कि स्त्री–पुरुषों के विशाल समूह का राजनैतिक स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति के अलग–अलग स्वराज्य से कोई ज्यादा अच्छी चीज नहीं है और इसलिये उसे पाने का तरीका वही है, जो एक–एक आदमी के आत्म–स्वराज्य या आत्मा संयम का है।''

गांधी के अनुसार ''स्वराज्य का अर्थ है, सरकारी नियंत्रण से मुक्त होने के लिये लगातार प्रयत्न करना, फिर वह नियंत्रण विदेशी सरकार का हो या स्वदेशी सरकार का। यदि स्वराज्य स्वराज्य हो जाने पर लोग अपने जीवन की हर छोटी बात के नियमन के लिये सरकार का मुँह ताकना शुरू कर दें, तो वह स्वराज्य सरकार किसी काम की नहीं।''

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

गांधी जी के वाक्यों में ''मेरा स्वराज्य तो हमारी सभ्यता की आत्मा को अक्षुण्ण रखना है। मैं बहुत सी चीजें लिखना चाहता हूँ, परन्तु वे तमाम हिन्दुस्तान की स्लेट पर लिखी जानी चाहिये। हो मैं पश्चिम से भी खुशी से उधार लूंगा, पर तभी जबकि मैं उसे अच्छे सूर के साथ वापस कर सकूँ।'' 6 उन्होंने कहा कि ''अगर स्वराज्य का अर्थ हमें सत्य बनाना और हमारी सभ्यता को अधिक शुद्ध तथा मजबूत बनाना न हो, तो वह किसी कीमत का नहीं होगा। हमारी सभ्यता का मूल–तत्व ही यह है कि हम अपने सब कामों में, फिर वे निजी हों या सार्वजनिक, नीति के पालन को सर्वोच्च स्थान देते हैं।''

गांधी जी के शब्दों में ''पूर्ण स्वराज्य कहने में आशय यह है कि वह जितना किसी राजा के लिये होगा उतना ही किसान के लिये, जितना किसी धनवान, जमींदार के लिये होगा उतना ही भूमिहीन खेतिहर के लिये, जितना हिंदुओं के लिये होगा उतना ही मुसलमानों के लिये जितना, जैन, यहूदी और सिख लोगों के लिये होगा उतना ही पारसियों और ईसाइयों के लिये उसमें जाति–पांति, धर्म अथवा दर्जे के भेदभाव के लिये कोई स्थान नहीं होगा।''

आगे उन्होंने कहा कि – ''कुछ लोगों का कहना है, कि भारतीय स्वराज्य तो ज्यादा संख्या वाले समाज यानि हिन्दुओं का ही राज्य होगा। इस मान्यता से ज्यादा बड़ी दूसरी गलती नहीं हो सकती। अगर यह सिद्ध हो तो अपने लिए, वे ऐसा कह सकते हैं कि वे उसे स्वराज्य मानने से इंकार कर दूँगा और अपनी सारी शक्ति लगाकर उसका विरोध करूँगा। उनके लिये हिन्द–स्वराज्य का अर्थ सब लोगों का राज्य, न्याय का राज्य है।''

गांधी जी ने कहा कि – ''उनके सपनों का स्वराज्य तो गरीबों का स्वराज्य होगा। जीवन की जिन आवश्यकताओं का उपयोग राजा और अमीर लोग करते हैं, वही तुम्हें भी सुलभ होना चाहिये, इसमें फर्क के लिये स्थान नहीं हो सकता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हमारे लिये उनके जैसे महल होने चाहिये। सुखी जीवन के लिये महलों की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें महलों में रख दिया जाय तो वे घबरा जायेंगे। लेकिन सभी को सामान्य सुविधाएं अवश्य मिलनी चाहिये, जिनका उपभोग, अमीर आदमी करता है। उन्हें इस बात में बिल्कुल भी संदेह नहीं है कि उनका स्वराज्य तब तक पूर्ण स्वराज्य नहीं होगा, जब तक पूर्ण स्वराज्य नहीं होगा, जब तक वह तुम्हें ये भारी सुविधांये देने की पूरी व्यवस्था नहीं कर देता।'' 10 उनकी पूर्ण स्वराज्य की कल्पना दूसरे देशों से कोई नाता न रखने वाली स्वतंत्रता की नहीं, बल्कि स्वस्थ और गम्भीर किस्म की स्वतन्त्रता की उनका देश प्रेम उग्र तो है, पर वह वर्द्धनशील नहीं है, उसमें किसी दूसरे राष्ट्र या व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने की भावना नहीं है। कानूनी सिद्धान्त असल में नैतिक सिद्धान्त ही है ''अपनी सम्पत्ति का उपयोग इस प्रकार करो कि पड़ोसी की सम्पत्ति को कोई हानि न पहुँचे।'' अतः यह कानूनी सिद्धान्त एक सनातन सत्य को प्रकट करता है और उसमें उनका पूरा विश्वास है।''

मूल्यांकनः संसार गांधी जी जैसे बहुपक्षीय पुरुष को आसानी से नहीं भूल सकता जो परिश्रमी जीवन व्यतीत करते थे, और सुख–दुःख की परवाह नहीं करते थे। उन्होंने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा का पालन किया था। वे अपने बारे में ठीक ही कहते थे – ''पूर्ण प्रेम का नियम ही उनके जीवन का नियम है।'' इसके अतिरिक्त जिनमें गाँधी जी या गाँधीइज्म को समझने की क्षमता नहीं थी या वे, वे उन्हें ''पीछे फेंकने वाला'' कहते थे या है। जैसा कि हर्बर्ट मैथ्यूज ने न्यूयॉर्क टाइम्स में लिखा था – वास्तविकता यह थी कि गांधी जी आगे ले चलने वाले और अपने समय से सदियों आगे थे।'' इसी युग के एक प्रसिद्ध दार्शनिक बनार्ड शॉ ने गांधी जी की हत्या पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा था ''बहुत अच्छा होना खतरनाक है।'' अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जार्ज मार्शल ने कहा था – ''महात्मा गांधी सारे मानव समाज की आत्मा के प्रवक्ता हैं।''

सर स्टेफर्ड क्रिप्स ने लिखा – ''वे किसी भी समय के आधुनिक इतिहास के किसी ऐसे अन्य व्यक्ति को नहीं जानता जिसने भौतिक वस्तुओं के ऊपर आत्मा की शक्ति का प्रदर्शन इतने प्रभावपूर्ण और विश्वसनीय तरीके से किया हो।''

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

जवाहरलाल नेहरू के लिये गाँधी जी की परिभाषित छवि इस प्रकार थी – ''मैंने उन्हें 1930 में हाथ में लाठी लिये दांडी से नमक यात्रा पर निकलते देखा। यह सत्य की खोज में निकला एक तीर्थयात्री था, खामोश, शान्तिप्रिय, दृढ़ निश्चयी और निर्भीक, जो अपनी खोज और अपनी तीर्थयात्रा जारी रखने वाला था, भले ही इसका नतीजा कुछ भी क्यों न हो।''

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधी जी का स्वराज्य तभी आयेगा जब हमारे मन में यह बात अच्छी तरह जम जाये कि स्वराज्य ''सत्य और अहिंसा का शुद्ध साधनों द्वारा हासिल करना है, और इसी के द्वारा इसका संचालन करना है। सच्ची लोकसत्ता या जनता का स्वराज्य कभी भी असत्यमय और हिंसक साधनों से नहीं आ सकता इसमें विरोध न तो खत्म हो बल्कि उग्र रूप धारण करेगा। जबकि वैचारिक स्वतन्त्रता को प्रकट होने का पूरा अवकाश केवल विशुद्ध अहिंसा पर आधारित शासन में मिल सकता है।

गुजरात के बेस्ट बेकरी कांड पर उच्चतम न्यायालय ने जो कुछ कहा है, उसमें लगता है कि जाति, बिरादरी, वर्ग–सम्प्रदाय या धर्म के आधार पर लोगों की हत्या करके अपने ही लोकतन्त्र को जीवित नहीं रखा, बल्कि निर्मम हत्या की है। गांधी जी तो बीसियों बार पीटे गये थे पर गुजरात के ''गाँधीवादी'' कांग्रेसी इतने डर गये कि एक धरना–प्रदर्शन तक नहीं कर पाये। गांधी जी मुसलमानों के मारे जाने के खिलाफ थे इसीलिये हिन्दूवादी ताकतों ने उनकी हत्या करा दी थी।

लेकिन मुसलमानों ने न जाने क्यों गाँधी जी को अपना संरक्षण न मानकर जिन्ना को अपनी स्वतंत्रता का संरक्षक समझते थे। एक गोष्ठी में एक मुसलमान ने यही सवाल उठाया था। जबकि कांग्रेस ने तो आजादी से अब तक तो मुसलमानों को वोट–मात्र माना। लेकिन गाँधी जी ने उन्हें सदैव मनुष्य मानते थे। आज गुजरात गाँधी जी को भूल गया। वहाँ बाजारवाद दूसरों की सम्पत्ति का अपहरण, हत्याओं की राजनीति – ये सारी चीजें गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के विरूद्ध है। वहाँ का सामान्य जन भले ऐसे न हो लेकिन किसी भी राजनैतिक दल के शक्तिशाली लोग इसी में लिप्त हैं। भले ही गाँधी जी पर आरोप वश पूंजीवादी कहे या उन पर सामंतवाद या ब्रितानी हुकूमत के समर्थ का दोषारोपण करे।

लेकिन गाँधी जी साम्प्रदायिकता विरोध, अहिंसा, वर्ग–मुक्ति, सामान्य जन में अटूट आस्था, उनके परिग्रह पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगा सकते। जब कांग्रेस आजादी का जश्न मना रही थी, गाँधी जी अपने देश में भी नहीं बल्कि बांग्लादेश (तब का पाकिस्तान) में नोआखाली में साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिये, पैदल भटक रहे थे। अतः गाँधी जी के लिये यह भारत न स्वराज्य वाला हो सकता था न रहने लायक। हिन्द–स्वराज्य को भारत के ही लोग अपने हितों के लिये बरबाद कर रहे हैं। इसलिये आजादी के 78 साल के बाद एक नये हिन्द–स्वराज्य की हमारे राष्ट्र को जरूरत है।

सन्दर्भ सूची

1- Mashruwala, K-S- & Gandhi and Marx
2- Joshi, Prabhat & Sahara Samya 04&10&2003
3- यंग इण्डिया – 26–03–1931
4- नवजीवन (हिन्दी) – 08–12–1927
5- यंग इण्डिया – 06–08–1924
6- नवजीवन (हिन्दी) – 29–06–1924
7- यंग इण्डिया – 23–01–1930
8- यंग इण्डिया – 05–03–1931

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

9- यंग इण्डिया – 16–04–1931

10- यंग इण्डिया – 26–03–1931

11- डपरोक्त

12- आशीर्वादम, ए०डी०, राजनीति विज्ञान पेज – 888